

बरकतुल्ला विश्वविद्यालय में शिक्षा व्यवस्था बेपटरी

सीएम के विजन पर अफसरशाही भारी

नईदुनिया प्रतिनिधि, भोपाल: मध्यप्रदेश के मुख्यमंत्री डॉ. मोहन यादव शिक्षा की गुणवत्ता, कौशल विकास और युवाओं के भविष्य को लेकर लगातार घोषणाएं और समीक्षाएं कर रहे हैं, लेकिन राजधानी का प्रतिष्ठित बरकतुल्ला विश्वविद्यालय इन दावों की जमीनी हकीकत पर सवाल खड़े कर रहा है। विश्वविद्यालय के कई विभागों में शिक्षकों के पद वर्षों से रिक्त हैं। विभागाध्यक्षों के सेवानिवृत्त होने के बाद अकादमिक गतिविधियां प्रभावित हो रही हैं और अतिथि विद्वानों के सहारे काम चलाया जा रहा है। सबसे गंभीर स्थिति योग विभाग की है। प्रधानमंत्री नरेंद्र मोदी योग को भारत की वैश्विक पहचान बताते हैं और मुख्यमंत्री भी इसे स्वास्थ्य तथा बेहतर जीवनशैली से जोड़ते रहे हैं। इसके बावजूद बरकतुल्ला विश्वविद्यालय के योग विभाग में एक भी नियमित शिक्षक नहीं बचा है। विभागाध्यक्ष के सेवानिवृत्त होने के बाद विभाग की जिम्मेदारी अतिथि विद्वानों के भरोसे है।

कथनी में विश्वगुरु, करनी में खाली कुर्सियां



एक समय इस विभाग में करीब 500 विद्यार्थियों का प्रवेश होता था। पिछले वर्ष ही यहां 300 से अधिक विद्यार्थी नामांकित थे और पांच विधाओं के पाठ्यक्रम संचालित हो रहे थे। अब इस वर्ष केवल एमए योग में लगभग 32 और डिप्लोमा पाठ्यक्रम में करीब 30 विद्यार्थियों ने आवेदन किया है। तीन पाठ्यक्रमों में एक भी विद्यार्थी के प्रवेश नहीं लेने के कारण उन्हें इस वर्ष बंद कर दिया गया। प्रवेश संख्या में यह गिरावट केवल छात्रों की घटती रुचि नहीं, बल्कि शिक्षण व्यवस्था की कमजोरी का संकेत भी है। यहां न योग विषय के विभागाध्यक्ष हैं और न ही नियमित शिक्षक। इसके कारण विभाग की शैक्षणिक विश्वसनीयता प्रभावित हो रही है। योग शिक्षा को लेकर सरकार के दावों और विश्वविद्यालय की

वास्तविक स्थिति के बीच स्पष्ट अंतर दिखाई दे रहा है। समस्या केवल योग विभाग तक सीमित नहीं है। फिजिक्स, केमिस्ट्री, लाइफ साइंस, मनोविज्ञान और समाजशास्त्र जैसे महत्वपूर्ण विभागों में भी प्रोफेसरों के पद लंबे समय से रिक्त हैं। कहीं एक शिक्षक को अतिरिक्त प्रभार सभालना पड़ रहा है, तो कहीं विभागाध्यक्ष के सेवानिवृत्त होते ही विभागीय गतिविधियां धीमी पड़ जाती हैं। इसका सीधा असर विद्यार्थियों की पढ़ाई, शोध और प्रतियोगी परीक्षाओं की तैयारी पर पड़ रहा है। उच्च शिक्षा विभाग की भर्ती प्रक्रिया पर भी सवाल उठ रहे हैं। रिक्त पदों पर स्थायी नियुक्तियों के बजाय अतिथि विद्वानों के सहारे काम चलाना स्थायी समाधान नहीं हो सकता। यदि समय रहते नियुक्तियां नहीं की गईं, तो कई विभागों का अस्तित्व और विश्वविद्यालय की अकादमिक गुणवत्ता, दोनों संकट में पड़ सकते हैं। फाइलों की धीमी गति का खामियाजा विद्यार्थियों को भुगतना पड़ रहा है। एक ओर सरकार नई शिक्षा नीति, रोजगार, कौशल विकास और युवा शक्ति की बात कर रही है, वहीं दूसरी ओर राजधानी के विश्वविद्यालय में पढ़ाने वाले शिक्षकों की कुर्सियां खाली हैं। यह स्थिति मुख्यमंत्री के शिक्षा संबंधी विजन और उच्च शिक्षा विभाग की कार्यप्रणाली के बीच गंभीर असंगति को उजागर करती है। बरकतुल्ला विश्वविद्यालय लाखों विद्यार्थियों के भविष्य से जुड़ा संस्थान है। सरकार को रिक्त पदों पर भर्ती प्रक्रिया तत्काल तेज करनी चाहिए, सेवानिवृत्त विभागाध्यक्षों के स्थान पर योग्य प्रोफेसरों की नियुक्ति करनी चाहिए और योग जैसे प्राथमिकता वाले विषयों के लिए विशेष भर्ती अभियान चलाना चाहिए। विश्वविद्यालयों को अनिश्चितकाल तक अतिथि विद्वानों के भरोसे नहीं छोड़ा जा सकता। अन्यथा शिक्षा सुधार के दावे जारी रहेंगे, लेकिन कक्षाओं में शिक्षकों की कमी बनी रहेगी।

श्रमोदय स्कूल में खाने में मरी छिपकली मिलने की सूचना, 13 बच्चे बीमार हुए

नईदुनिया प्रतिनिधि, भोपाल: मुगालिया छाप-नीलबड़ स्थित शासकीय श्रमोदय आवासीय विद्यालय के बाँयज हॉस्टल में शनिवार रात भोजन वितरण के दौरान एक थाली में आलू की सब्जी के साथ मरी हुई छिपकली दिखाई देने की बात सामने आई। इसके बाद करीब 13 बच्चों को उल्टी और पेट दर्द की शिकायत हुई। सभी को रात करीब 10:30 बजे उपचार के लिए जेपी अस्पताल भेजा गया।



बाद विद्यार्थियों को পরোसा गया। बीमार बच्चों में छठवीं से नौवीं कक्षा तक के छात्र शामिल हैं। हॉस्टल में रात 8 बजे से भोजन वितरण शुरू होता है। भोजन गर्ल्स हॉस्टल की मेस में तैयार किया जाता है और उसका एक हिस्सा बाँयज हॉस्टल में भेजा जाता है। श्रमोदय आवासीय विद्यालय के

हॉस्टल में छठवीं से 12वीं कक्षा तक के कुल 1120 छात्र-छात्राएं रहते हैं। इनमें 560 छात्र और 560 छात्राएं हैं। दोनों के लिए अलग-अलग भवन हैं। रातोबड़ थाना प्रभारी रासबिहारी शर्मा ने बताया कि बच्चों की तबीयत बिगड़ने और उन्हें अस्पताल में भर्ती कराने की सूचना मिली थी। मामले की जांच की जा रही है। जांच में सामने आने वाले तथ्यों के आधार पर नियमानुसार कार्रवाई की जाएगी। खाने में छिपकली मिलने की आधिकारिक पुष्टि नहीं हुई है। स्कूल की प्रिंसिपल रतना दुबे से संपर्क करने की कोशिश की गई, लेकिन उनकी ओर से जवाब नहीं मिला।

कान्हा के जंगलों में फिर गूंजेगी जंगली भैंसों की धमक, 100 साल बाद लौटे

मुख्यमंत्री डॉ. मोहन यादव ने आठ भैंसों को बड़े बाड़े में छोड़ा, तीन साल में 50 को बसाने की तैयारी

नईदुनिया प्रतिनिधि, भोपाल: मध्यप्रदेश में जंगली भैंसों की आबादी फिर से बसाने की दिशा में महत्वपूर्ण कदम उठाया गया है। मुख्यमंत्री डॉ. मोहन यादव ने रविवार को कान्हा टाइगर रिजर्व के सुपखार परिक्षेत्र में काजीरंगा राष्ट्रीय उद्यान से लाए गए आठ जंगली भैंसों को 17 हेक्टेयर क्षेत्र में बने बड़े बाड़े में छोड़ा। प्रदेश के वन क्षेत्रों से यह प्रजाति करीब 100 साल पहले विलुप्त हो गई थी।



काजीरंगा से 2200 किलोमीटर का सफर

असम के मुख्यमंत्री हिमंत बिस्वा सरमा के सहयोग से जंगली भैंसों को काजीरंगा से मध्यप्रदेश लाया गया। इनमें छह मादा और दो नर शामिल हैं। इन्हें दो वरणों में 28 अप्रैल और 9 मई 2026 को कान्हा के सुपखार परिक्षेत्र में लाया गया था। शुरुआत में सभी को एक हेक्टेयर के छोटे बाड़े में क्वारंटिन रखा गया, ताकि वे यहां की जलवायु और पर्यावरण के अनुकूल हो सकें। अवधि पूरी होने के बाद इन्हें बड़े बाड़े में स्थानांतरित किया गया।

तीन साल में 50 भैंसों को बसाने का लक्ष्य

वन विभाग ने आगामी तीन वर्षों में सुपखार क्षेत्र में 50 जंगली भैंसों को पुनर्संस्थापित करने का लक्ष्य निर्धारित किया है। क्षेत्र में पहले ही जंगली भैंसों की मौजूदगी के प्रमाण मिले हैं। इस परियोजना से प्रदेश की जैव विविधता को बढ़ावा देने और प्राकृतिक पारिस्थितिकी तंत्र को मजबूत करने में मदद मिलने की उम्मीद है। मुख्यमंत्री ने वन्यजीव संरक्षण के साथ क्षेत्र के विकास पर भी जोर दिया। इस अवसर पर वन विभाग के वरिष्ठ अधिकारी, जनप्रतिनिधि और स्थानीय प्रशासन के अधिकारी उपस्थित रहे।

बारह दिवसीय स्वदेशी मेला का आयोजन 23 से

नईदुनिया प्रतिनिधि, भोपाल: स्वदेशी उत्पादों को बढ़ावा देने और स्थानीय कारीगरों व उद्यमियों को बाजार उपलब्ध कराने के उद्देश्य से भोपाल में 23 अक्टूबर से 12 दिवसीय स्वदेशी मेले का आयोजन किया जाएगा। मिंटो हॉल के पास एमवीएम ग्राउंड में लगने वाले मेले में देशभर के हस्तशिल्प, घरेलू सामान और स्वदेशी उत्पादों के 200 से अधिक स्टॉल लगाए जाएंगे। स्वदेशी जागरण मंच और स्वर्णिम भारतवर्ष फाउंडेशन के संयुक्त तत्वावधान में आयोजित इस मेले में कारीगरों, बुनकरों, शिल्पकारों और सूक्ष्म, लघु एवं मध्यम उद्यमों को अपने उत्पादों



के प्रदर्शन और बिक्री का अवसर मिलेगा। मेले में खरीदारी के साथ प्रतिदिन सांस्कृतिक कार्यक्रम, नाटक, नृत्य और बच्चों की प्रतियोगिताएं भी आयोजित की जाएंगी।

तेजकुंवरबाई काश्यप का निधन, अंतिम यात्रा आज

नईदुनिया प्रतिनिधि, भोपाल: उन्होंने परिवार की जिम्मेदारियां मध्यप्रदेश शासन के सूक्ष्म, लघु संभालीं और अपना जीवन धर्म, एवं मध्यम उद्यम मंत्री चेतन्य काश्यप की माताजी श्रीमती तेजकुंवरबाई काश्यप का रविवार को मुंबई में लंबी बीमारी के बाद 83 वर्ष की आयु में निधन हो गया। उनके निधन से धार्मिक, सामाजिक और सेवा क्षेत्र में शोक व्याप्त है। श्रीमती काश्यप का जन्म 17 मार्च 1943 को कुक्षी में हुआ था। वर्ष 1958 में उनका विवाह रतलाम के अशोक कुमार काश्यप से हुआ। पति के आकस्मिक निधन के बाद

उन्होंने परिवार की जिम्मेदारियां संभालीं और अपना जीवन धर्म, तपस्या तथा जनसेवा को समर्पित कर दिया। समाजसेवा के क्षेत्र में उन्होंने रतलाम के अहिंसा ग्राम में जरूरतमंद परिवारों के पुनर्वास और महिलाओं को स्वरोजगार से जोड़ने में महत्वपूर्ण भूमिका निभाई। वे विभिन्न धार्मिक एवं सामाजिक संस्थाओं से भी जुड़ी रहीं। उनकी अंतिम यात्रा सोमवार, 12 अक्टूबर को सुबह 10:30 बजे रतलाम स्थित निवास 'वीसाजी मेशन', स्टेशन रोड से निकलेगी।

समापन

कहानियों और रचनात्मक गतिविधियों से ...

बुकारू चिल्ड्रेन्स लिटरेचर फेस्टिवल : बच्चों ने सीखी कल्पनाओं की उड़ान

नईदुनिया प्रतिनिधि, भोपाल: भारत भवन में आयोजित दो दिवसीय बुकारू चिल्ड्रेन्स लिटरेचर फेस्टिवल का रविवार को समापन हुआ। मध्यप्रदेश संस्कृति विभाग के सहयोग से आयोजित इस महोत्सव में बच्चों ने कहानियों, कविताओं और रचनात्मक गतिविधियों के माध्यम से कल्पनाओं की दुनिया को करीब से जाना।

फेस्टिवल में अतुल वाधवानी की कहानी 'दोस्त खरगोश' ने दोस्ती और भावनात्मक सहयोग का संदेश दिया। वहीं नारायण देवनाथन की कहानी ने बच्चों को



जासूसी और रहस्यों की दुनिया से परिचित कराया। बूढ़ा राठी की 'अ रेसिपी फॉर बंडर' में जिज्ञासा और

स्वीकार करने की प्रेरणा दी। लारेमी ली के सत्र में बच्चों ने अपनी भावनाओं और विचारों को

कविता के माध्यम से व्यक्त करना सीखा। आफताब यूसुफ शेख ने गजल परंपरा और काव्य शैली पर चर्चा की। अन्य सत्रों में बच्चों को वन्यजीव संरक्षण, सुंदरबन की जैव विविधता, ऐतिहासिक प्रसंगों और प्रकृति की आवाजों से परिचित कराया गया। महोत्सव में कहानी सुनाने, सवाल पूछने और कल्पनाओं को रचनात्मक रूप देने के अवसर मिले। विभिन्न साहित्यिक सत्रों के माध्यम से बच्चों को संवेदनशीलता, जिज्ञासा, प्रकृति प्रेम और रचनात्मक अभिव्यक्ति के महत्व को समझने का अवसर मिला।

खास-खबरें

मुख्यमंत्री ने दी शारदीय

नवरात्र की मंगलकामनाएं

भोपाल : मुख्यमंत्री डॉ. मोहन यादव ने शशित, श्रद्धा और आस्था के पावन पर्व शारदीय नवरात्रि की श्रद्धालुओं को मंगलकामनाएं दी हैं। मुख्यमंत्री डॉ. यादव ने अपने संदेश में कहा है कि मां का आशीर्वाद सभी के जीवन में सुख-शांति-समृद्धि और सकारात्मक ऊर्जा का संचार प्रदान करे। मां दुर्गा की आराधना के साथ हम सभी सेवा-सद्भाव और जनकल्याण के संकल्प को और मजबूत करें। मुख्यमंत्री डॉ. यादव ने नवरात्रि के प्रथम दिन मां शैलपुत्री के श्रचरणों में नमन किया।

महाराजा अग्रसेन जयंती

पर शुभकामनाएं

भोपाल : मुख्यमंत्री डॉ. मोहन यादव ने महाराजा अग्रसेन जी की जयंती पर शुभकामनाएं दीं। डॉ. यादव ने कहा कि अग्रसेन महाराज का जीवन समता-सहयोग-सेवा और समाज के कल्याण के आदर्श का प्रतीक है। मुख्यमंत्री डॉ. यादव ने महाराज अग्रसेन के आदर्शों को आत्मसात कर समरस, समृद्ध और सशक्त समाज के निर्माण में अपना योगदान देने का प्रदेशवासियों से आह्वान किया है।

अंतर्राष्ट्रीय बालिका

दिवस पर शुभकामनाएं

भोपाल : मुख्यमंत्री डॉ. मोहन यादव ने अंतर्राष्ट्रीय बालिका दिवस पर बेटियों को शुभकामनाएं दीं हैं। मुख्यमंत्री डॉ. यादव ने अपने संदेश में कामना की कि बेटियां शक्ति, साहस और आत्मविश्वास का स्वर्ण हैं। उनके सपनों की नए पंख मिलें, उन्हें आगे बढ़ने के भरपूर अवसर मिलें और वे अपनी प्रतिभा से हर क्षेत्र में नई ऊंचाइयां हासिल करें। हमारी बेटियां शिक्षित, उन्होंने कहा कि बेटियाँ सुरक्षित और आत्मनिर्भर बनें।